IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य में मुस्लिम समाज की शैक्षिक स्थिति

आसिफा महम्मद शेख
शोधार्थी, पाटकर वर्दे कॉलेज, गोरेगाव।

शिक्षा के द्वारा मानव ने अपनी बौद्धिक (मानसिक), सामाजिक और आध्यात्मिक प्रगति की है। इस्लाम धर्म में भी शिक्षा का आदेश दिया गया है। इस्लाम के पवित्र ग्रंथ कुरान का पहला शब्द ही 'इकरा' जिसका अर्थ है पढ़ो। मुस्लिम समाज में पारंपारिक रूप से चलीं आ रही ही मदरसा पद्धति आज भी कायम है। आधुनिक युग में शिक्षा प्रदान करने का कार्य शिक्षा संस्थाओं द्वारा औपचारिक रूप से किया जाने लगा है। मदरसे में धार्मिक शिक्षा दी जाती है, जिससे मुस्लिम बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अन्य समुदाया से पीछे है। इस समुदाय में बड़े पैमाने पर फैली गरीबी और बेरोजगारी इस के लिए जिम्मेदार है। सच्चर कमेटी रिपोर्ट भी बताती है कि," भारतीय मुसलमान शिक्षा के मामले में लगभग हर स्तर पर पिछड़ा हैं। उनकी साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से बहुत कम है। प्राथमिक शिक्षा के बाद स्कूल छोड़ देने वाले मुस्लिम बच्चों की संख्या सबसे ज्यादा है। इसी कारण स्नातक तथा स्नानोकोत्तर पढ़ने वाले मुस्लिम विद्यार्थियों की संख्या उनकी आबादी के अनुपात काफी कम है।"[1]मुस्लिम लेखकों की कहानियों में शिक्षा को लेकर स्पष्ट रूप से नज़र आती है कि मुस्लिम समाज के निम्नस्तर शिक्षा का पूर्णतः अभाव है। अशिक्षा के कारण यह वर्ग बेरोजगारी, भूखमरी, अस्वास्थ्य और गरीबी जैसी समस्याओं से भीड़ रहा है। अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपने साहित्य में शिक्षा और उच्च शिक्षा, स्त्री शिक्षा आदि का चित्रण किया है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानी 'जर्दा' का नायक कहता है,"एम.एस्सी कर रहा हूं कोई,अच्छी सर्विस मिल जाएगी।"[2] 'पटाक्षेप' कहानी की वहीदा एम.ए.कर नौकरी करती है और आर्थिक दृष्टि से अपने परिवार को मजबूत बनाती है। परंतु शिक्षा के प्रति मुसलमानों में अनास्था का वातावरण है। इस के मुख्य दो कारण बताएं जाते हैं एक मुसलमानों की बदत्तर आर्थिक स्थिति और सरकार की दोहरी नीति जो नौकरियों के मामले में उनके साथ भेदभाव करता है। इस प्रकार शिक्षा को लेकर मुसलमानों के मन में उदासीनता नजर आती है। अतः शिक्षा के संबंध में कई प्रकार की समस्याएं हमें नजर आती है। आजकल मुस्लिम समाज की शैक्षणिक स्थिति ठीक नहीं है। मुस्लिम समाज आज भी शिक्षा के क्षेत्र में अन्य समाजों से काफी पीछे ही हैं। लेकिन पहले के मुकाबले में आज के दौर का विचार किया जाए तो, मुस्लिम समाज शिक्षा के क्षेत्र में आगे कुछ हद तक बढ़ रहा है। फिर भी मुस्लिम समाज में आर्थिक पिछड़ापन होने के कारण गरीब आर्थिक रूप से कमजोर लोग अपने बच्चों को अच्छी तरह से शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं। आज के समय में भी मुस्लिम समाज के कई गरीब और अमीर बच्चे मदरसे में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। मुस्लिम परंपरावादी कट्टरपंथियों ने धर्म का सहारा लेकर मुस्लिम समाज से शिक्षा' का अधिकार छीन लिया है। मुस्लिम समाज में शिक्षा की शुरुआत धर्मग्रंथ कुरान से होती है। मुसलमान के हर घर में कुरान जरूर मिलेंग। आज कुरान के लाखो हाफिज है, जिन्हें कुरान याद है। अतः जगह-जगह मकतब और मदरसे खोले गये है। जिसमें धर्म संबंधी शिक्षा प्रदान की जाती है। 'अपवित्र आख्यान' उपन्यास के नायक जमील के घरवाले कहते हैं कि, उसकी शादी ग्यारह बारह साल की ऐसी लड़की से करना चाहते हैं जो सिर्फ धार्मिक शिक्षा की बड़ी चीज (कुरान शरीफ) के अलावा कुछ भी नहीं पढ़ रखा हो।"[3] जबकि जमील एम.ए,पीएच.डी कर मुस्लिम कॉलेज में पढ़ाता है। मुस्लिम समाज में लड़कियों का धार्मिक शिक्षा अधिक दी जाती है और सरकारी शिक्षा से उन्हें वंचित किया जाता है। कम उम्र में उनकी शादी कर दी जाती है इसीलिए विवाह के बाद मुस्लिम लड़कियों पढ़ाई नहीं कर पाती। और घर के चार दिवारियों में सिमटकर रह जाती है। अब्दुल बिस्मिल्लाह ने आग, दावत आदि कहानियों में इसका चित्रण किया है। महात्मा गांधी के अनुसार,"शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक या मनुष्य के शरीर या मस्तिष्क या आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम विकास से है।"[4] मुस्लिम समाज में शिक्षा को सिर्फ और सिर्फ धार्मिक शिक्षा तक ही समेट कर रख दिया है। अब्दुल बिस्मिल्ल ने अपने

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

उपन्यास 'अपवित्र अख्यान' में शिक्षा पद्धति के परिवर्तित दृष्टिकोण पर प्रकाश डालते हुए लिखा है,"हॉ- हॉ इनके हिसाब से अब सब लोग अगर फारसी पढ़ लें तो मरते वक्त कोई पानी देने वाला भी न होगा। किसी ने यह जो कहा है, क्या गलत कहा है।"[5] इस प्रकार शिक्षा को लेकर अनेक विसंगतियां मुस्लिम समाज में है, जिससे यह समुदाय शिक्षा के क्षेत्र में सबसे पिछड़ा माना जाता है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में मुस्लिम समाज को आधुनिक शिक्षा के प्रति जागृक करने का प्रयास किया है। 'झीनी- झीनी बीनी चदरिया' में आधुनिक शिक्षा पद्धति पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, वह स्कूल में सिर्फ बे, पे, ही नहीं बल्की क, ख, ग, घ भी पढ़ रहा है। कुछ दिनों बाद ए.बी.सी.डी. भी पढ़ेगा।"[6] परंपरावादी धार्मिक शिक्षा के साथ साथ आधुनिकतावादी या सामाजिक शिक्षा अनिवार्य है। आज के आधुनिक युग में शिक्षा के नए-नए मार्ग खुल रहे है। अपवित्र आख्यान उपन्यास में शिक्षा पद्धति का परिवर्तीत दृष्टिकोण, "अरे मैं ठहरा कवि और लेखक, जब मेरा लिखा मेरी ही नहीं पढ़ सकेंगे तो दुनिया के पढ़ने से क्या होगा? फिर अभी वह एम .ए है, कल को पीएच.डी हो जाएगा और एक एम.ए पीएच.डी की पत्नी पत्र पढ़वाने किसी ओर के पास जाए।"[7] वर्तमान समय में मदरसे में भी धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा की भी सुविधा हो चुकी है और आजकल बच्चे दोनों तरह की शिक्षा हासिल कर रहे हैं। शिक्षित मुस्लिम वर्ग अपने बच्चों को अधिक पढ़ा रहे हैं। मुस्लिम समाज का शिक्षा का स्तर पहले के मुकाबले में बढ़ रहा है। लेकिन मुस्लिम समाज का निम्नवर्ग आज भी वंचित है। क्योंकि मुस्लिम समाज के निम्नवर्ग के बच्चों के लिए, सरकार द्वारा पढाई के लिए, जो योजनाएँ बनायी जा रही हैं। वे सरकारी योजनाएँ नाम मात्र दिखाई दे रही हैं। वह उन लोगों को मिलती नहीं है जिसे मिलनी चाहिए। उसका लाभ किसी और को ही मिलता है। इसलिए न चाहते हुए भी गरीब बच्चों को शिक्षा छोड़नी पड़ती है। इसलिए आज भी मुस्लिम समाज में शिक्षा के क्षेत्र में काफी पिछड़ता जा रहा है। शिक्षा से वंचित रहने का कारण माता-पिता भी है जो बच्चों की शिक्षा छुड़वा देते हैं। किसी को मजबूरन पढ़ाई छोड़नी पड़ती है और परिवार को संभालने के लिए कुछ छोटे-मोटे काम कर लेते है।'बैरंग चिट्ठी' कहानी में डाकियां वहिद उसके बेटे को पढ़ा-लिखाकर अफसर बनाना चाहता है। वह जानना है कि कान्वेंट स्कूल का खर्चा बहुत है ज्यादा होता है। वहिद की एक मात्र इच्छा यह है कि उसका गुडडू 'पढ़-लिखकर कोई बहुत बडा अफसर बने । इसलिए उसने निश्चय किया है कि चाहे खुद नमक-रोटी खाएगा, लेकिन बेटे को वह कान्वेंट में पढाएगा क्योंकि उसने सुन रखा है कि अफसर वही लोग बनते हैं। जो कान्वेंट में पढ़ते हैं।"[8] वह अपने बेटे को पूरी तरह साक्षात्कार के लिए तैयार करता है। लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में पूँजीवाद वर्चस्व दिखाई देता है। इसलिए वाहिद का बेटा कादिर के नाम के जगह हाजी साहब के पोते का नाम लिखा जाता है। शिक्षा का बाजारीकरण अधिक होता हुआ दिख रहा है।

'अधर्म युध्द' कहानी का कथानायक मुसलमान होते हुए हिंदी में एम.ए. किया है। भारतीय समाज में बिना सिफारिश नौकरी मिलना मुश्किल हो गया है। नायक नेताजी के सिफारिश पर कालेज में अध्यापक के तौर पर नियुक्त किया जाता है। सिफारिश न होती तो वह नियुक्त कभी नहीं होता क्योंकि उसकी समस्या उसका धर्म या उसके साथ जातिय भेदभाव किया जाता है। कथानायक कहता है कि "घरवालों की इच्छा के विरुद्ध भी मैंने यह सब किया है। पर मुझे क्या मिला? अपाहिज वेतन की नौकरी और जाति के नाम पर अपमान! मैं बुझ गया था।"[9] "तूफान से पहले' कहानी के सेवकराम गांव के हलवाहे परिवार से है। उनके बाप- दादा का पुश्तैनी धंधा ही दूसरों के खेतों में हल जोतना रहा है। लेकिन सेवकराम ने इस प्रथा को तोड़ दिया और पढ़ाई में लग गया है। लेकिन वह स्वयं में कुछ परिवर्तन नहीं करता वह अपनी पढ़ाई जारी रखता है। अनेक बार गांव के सवर्णों ने उसका मनोबल गिराया। शिक्षा प्राप्त करते समय ही उसके माता-पिता का देहांत हो जाता है। थोड़ा-बहुत पढ़ा-लिखा होने के कारण गांव से उसका जी उचट जाता है और वह शहर की ओर चला जाता है। इसलिए लेखक लिखते हैं कि," उसका अनेक बार मनोबल गिराए जाने के बावजूद वे पढ़ गए और नौकरी करने के लिए शहर चले गए। शादी भी उन्होंने शहर में ही की और बाल-बच्चे भी वहीं हुए। सेवकरामजी फिर गांव नहीं लौटे।[10] गांव में लौटने

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

जैसी उनकी कोई चीज वहां छूट ही नहीं गई थी। उनकी पढ़ाई के समय ही उन्हें सब कुछ मिला था। मान-अपमान, उपेक्षा, इसके अलावा इस सामान्य हलवाहे के बेटे को क्या मिल सकता है। इसलिए सेवकराम दुबारा गांव लौटना नहीं चाहते है। अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपने उपन्यास 'मुखड़ा क्या देखे' में मुस्लिम परंपरावादी कट्टरपंथियों ने धर्म का सहारा लेकर मुस्लिम समाज से शिक्षा' का अधिकार छीन लिया है इस पर प्रकाश डालते हुए लिखा है,"तो बुधुआ भी अब चुडियाँ पहनाएगा? चुडिहार का बेटवा चूड़ी न पहनाएगा तो क्या डिप्टी कलट्टरी करेगा।"[11] निम्नवर्गीय लोगों को पढ़ना-लिखनां नहीं चाहिए इस बात को लेकर ताने कसे जाते और कई बार अपमानित किया जाता है। समाज की मानसिकता को उजागर किया है।

मुस्लिम परिवार में नारी शिक्षा के प्रति बहुत अधिक चेतन नहीं है। अधिकांश अपने घरों की लड़कियों को प्राथमिक शिक्षा तक पढ़ने को लेकर ही सचेत है। स्त्रियों के प्रति उनकी जो रुढ़िगत धारणाएं है वे उनको उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित नहीं करती। आग' कहानी की मुन्नी जिसका विवाह कम उम्र में ही कर दिया। जैसे बाबा कहते है कि," जब हाईस्कूल में फेल हो गई तो भैया ने पढ़ाई बंद कर दी और विवाह कर दिया। फिर उसका गोना भी कर दिया।"[12] आर्थिक अभाव के कारण 'इज्जतदार' कहानी के खालिक को पढ़ाई करने की इच्छा होते हुए भी पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। किसी प्रकार उसके पिता उसको मिडिल स्कूल तक पढ़ाते है। परंतु सरकारी योजनाएँ नाम मात्र है। इसलिए सुविधा के अभाव में जरूरतमंद बच्चे शिक्षा से वंचित रहते हैं। कुंठाव उपन्यास की इद्दन अपनी बेटी सितारा को पढ़ाना चाहती थी। सितारा पाँच तक पढ़ी थी आगे स्कूल दूर पडता है इसलिए छोड दिया था। ठाकुर गजेन्द्र बोर्ड सिंह सितारा को परीक्षा में पास करने में सहायता करते हैं। इन सबके बदले वह सितारा का शारीरिक शोषण भी करता है। मुस्लिम स्त्री शिक्षा को लेकर स्वावलंबी बन रही है। उसमें आत्मचेतना जागृत हो रही है। हुमा मुस्लिम संगठन में काम करती है। हुमा ने समाजशास्त्र में एम.ए किया है किंतु बेरोजगार होने के कारण परिवार का खर्च चलाने के लिए ट्यूशन लेती है।

मुस्लिम औरतों की बदहाली शैक्षिक और आर्थिक स्थिति के लिए मुस्लिम समाज खुद जिम्मेदार है। 'बशर्ते' इस्लाम में 'हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने फरमाया है कि, 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' में मुस्लिम परिवार में नारी शिक्षा में बढ़ती हुई विसंगतियों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है-," तुमने अगर एक लड़के को पढाया तो मात्र एक व्यक्ति को ही पढ़ाया। लेकिन अगर एक लड़की को पढ़ाया तो एक खानदान को और एक नस्ल को पढ़ाया।"[13] मुस्लिम औरतें शिक्षा आर्थिक स्तर से लेकर सामाजिक और पारिवारिक तथा स्वावलम्बन के मामले में बदतर हालत में हैं। शिक्षा की तरह आत्मनिर्भरता के मामले में भी मुस्लिम महिलाओं की हालत चिंताजनक है। अधिकांश मुस्लिम महिलाओं को पैसों के लिए अपने परिवारजनों पर ही निर्भर रहना पड़ता है, इसका वर्णन अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपने उपन्यासों में किया है। झीनी झीनी बीनी चदरिया' का इकबाल कहता है- "हमारी बिरादरी की यह बहुत बड़ी कमी है कि हम लोग लड़कियों को सिर्फ कुरआन शरीफ पढ़ाकर अपना फर्ज खतम समझ लेते है। दुनिया बहुत आगे बढ़ गई है और तरक्की के इस आधुनिक जमाने में हमें हर तरह से खुद को आगे लेना होगा।"[14] वर्तमान स्थिति में सरकारी आंकड़ों के मुताबिक भारत की लगभग 60 फीसदी मुस्लिम महिलाएं शिक्षा से वंचित है, इनमें से 10 फीसदी महिलाएँ ही उच्च शिक्षा ग्रहण कर पाती हैं जबकि शेष 30 फीसदी महिलाए दसवीं कक्षा तक अथवा उससे भी कम तक की शिक्षा पाकर घर की बहु बनने के लिए मजबूर हो जाती है।

इस्लाम में प्रत्येक मुसलमान के लिए शिक्षा प्राप्त करना फर्ज है। भारतीय परिवेश में स्त्री शिक्षा को लेकर बात की जाए तो नवजागरणकाल में इसके बीज़ देखने को मिलते हैं। परंतु मुस्लिम शिक्षा को यदि ध्यान में रखकर देखा जाए तो इसके कुछ बहुत ज्यादा सूत्र नहीं मिलते। मुस्लिम परिवारों में स्त्री शिक्षा के प्रति बहुत अधिक चेतना नहीं है। अधिकाश अपने घर की लड़कियों को प्राथमिक शिक्षा तक पढ़ाने को लेकर ही सचेत है। स्त्रियों को प्रति इनकी जो रूढ़ीगत धारणाएं हैं, वे इनको उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित नहीं करती। जिस कारण से स्त्री समाज की व्यावहारिकता को समझ नहीं पाती।मुस्लिम समाज में अशिक्षा एवं अजागरूकता के कारण अपना विकास नहीं कर पा रहे हैं। मुस्लिम समाज में उच्च शिक्षा तथा ज्ञान-विज्ञान

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

के प्रति जागरूकता निर्माण हो रही है। 'अपवित्र आख्यान' का जमील उच्च शिक्षा लेकर प्रोफेसर बनना चाहता है। 'यह कोई अंत नहीं' इस कहानी में अब्दुल बिस्मिल्लाह ने गुलाम सरवर के माध्यम से शिक्षा का महत्व प्रस्तुत किया है। लेखक ने बताया है कि शिक्षा और मेहनत से आदमी समाज में ऊँचा स्थान प्राप्त कर सकता है। इसी प्रकार गुलाम सरोवर भी एक प्रतिष्ठित शिक्षक बनता है। मुस्लिम स्त्री शिक्षा लेकर स्वावलंबी बन रही है और पुरुषों द्वारा शोषण के खिलाफ आवाज उठा रही है। 'अपवित्र आख्यान' की यास्मीन युनिवर्सिटी में प्रोफेसर बनी है। शिक्षा के माध्यम से ही मुस्लिम समाज में सामाजिक स्थिति में सुधार हो सकता है। मुस्लिम समाज में फैला अंधविश्वास, धर्मांधता, अज्ञानता आदि परिस्थिति देखते हुए मुस्लिम समाज को आधुनिक युग की शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए और अशिक्षा के कारण परिवार अस्थिर होते हैं। कलह होता है, अर्थ अभाव के कारण जीवन नरकिय होता है। आधुनिक समाज में औद्योगीकरण के कारण शिक्षा का स्वरूप बदल गया है। अब शिक्षा सार्वभौमिक बन गई है और सभी जातियों और वर्गों के लिए उपलब्ध है। आज वाणिज्य व्यवसाय, विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान की शिक्षा देने वाली विभिन्न संस्थाएं है। शिक्षा में आज धर्म और नैतिकता का प्रभाव कम हुआ है। आज शिक्षा वैयक्तिक के स्थान पर समूहवादी है। मुस्लिम समाज आज अपने अधिकारों की मांग के लिए लढ़ रहा है। मुस्लिम समाज में आज शिक्षा के लिए सामाजिक भेद की नीति को देखा जा रहा है। उन्हें जागरुक होने की आवश्यकता है तथा शिक्षा के महत्व को भी समझे। मुस्लिम समाज को आधुनिक युग की आवश्यकता को ध्यान रखते हुए मुस्लिम समाज को शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए।

संदर्भ :-

1. भारत में मुसलमानों की सामाजिक,आर्थिक और शैक्षिक स्थिति,सच्चर कमेटी रिपोर्ट,भारत सरकार-2006,पृष्ठ क्र-47
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह,ताकि सनद रहे (जर्दा) पृष्ठ क्र-27
3. वहीं, अपवित्र आख्यान, पृष्ठ क्र-99
4. महात्मा गांधी, उद्धृत, शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा, हरचंद मकवाना,पृष्ठ क्र-33
5. वहीं,अपवित्र अख्यान,पृष्ठ क्र-11
6. वहीं, झीनी झीनी बीनी चदरिया,पृष्ठ क्र-54
7. वही, अपवित्र आख्यान,पृष्ठ क्र.40
8. वहीं,ताकि सनद रहे,बैरंग चिट्ठी, पृष्ठ क्र-85
9. वहीं,ताकि सनद रहे,अर्धम युद्ध, पृष्ठ क्र -51
10. अब्दुल बिस्मिल्लाह,जिनिया के फूल,पृष्ठ क्र- 93
11. वहीं,मुखड़ा क्या देखें,पृष्ठ क्र-131
12. वहीं,ताकि सनद रहे-आग,पृष्ठ क्र-288
13. अब्दुल बिस्मिल्लाह, झीनी-झीनी बीनी चदरिया,पृष्ठ क्र-160
14. अब्दुल बिस्मिल्लाह,झीनी-झीनी बीनी चदरिया' पृष्ठ क्र-160